

Dr. Kumari Priyanka

History department

H.D jain college, ara

Notes for pg semester 2

Topic :- पाटलिपुत्र का संक्षिप्त इतिहास

पाटलिपुत्र (आधुनिक पटना, बिहार) प्राचीन भारत का एक महत्वपूर्ण नगर था, जिसे भारतीय इतिहास में राजनीतिक, सांस्कृतिक और आर्थिक दृष्टि से विशेष स्थान प्राप्त है। यह कई महान राजवंशों की राजधानी रहा और भारतीय सभ्यता के विकास में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

प्रमुख ऐतिहासिक चरण

1. प्रारंभिक स्थापना

- पाटलिपुत्र की स्थापना **अजातशत्रु** (हर्यक वंश, 5वीं शताब्दी ई.पू.) ने की थी।
- मूल रूप से इसे **पाटलिग्राम** कहा जाता था, और इसकी स्थापना मगध साम्राज्य की रक्षा के लिए की गई थी।

2. मौर्य साम्राज्य (321 ई.पू.-185 ई.पू.)

- पाटलिपुत्र **चंद्रगुप्त मौर्य** के समय मौर्य साम्राज्य की राजधानी बना।
- **सम्राट अशोक** के शासनकाल में यह सांस्कृतिक, धार्मिक और राजनीतिक दृष्टि से चरम पर पहुँचा।
- यहाँ से बौद्ध धर्म का व्यापक प्रचार-प्रसार हुआ।

3. शुंग और कण्व वंश

- मौर्य साम्राज्य के पतन के बाद **शुंग वंश** और फिर **कण्व वंश** ने पाटलिपुत्र से शासन किया।

4. गुप्त साम्राज्य (319-550 ई.)

- चंद्रगुप्त प्रथम ने पाटलिपुत्र को अपनी राजधानी बनाया।
- समुद्रगुप्त और चंद्रगुप्त द्वितीय के समय यह सांस्कृतिक और वैज्ञानिक उन्नति का केंद्र बना।
- यह काल स्वर्ण युग कहलाता है, जिसमें साहित्य, कला, विज्ञान, और गणित ने महत्वपूर्ण प्रगति की।

5. मौर्य और गुप्त काल के बाद पतन

- गुप्त साम्राज्य के पतन के बाद पाटलिपुत्र की राजनीतिक महत्ता धीरे-धीरे कम होने लगी।
- हूणों के आक्रमणों और आंतरिक संघर्षों के कारण यह नगर धीरे-धीरे उपेक्षित हो गया।

6. मध्यकालीन इतिहास

- मुस्लिम आक्रमणों और प्रशासनिक बदलावों के कारण पाटलिपुत्र की महत्ता घटती चली गई।
- धीरे-धीरे यह नगर एक छोटे क्षेत्रीय केंद्र में सिमट गया।

7. आधुनिक युग में पुनरुत्थान

- मुगल और ब्रिटिश काल में पाटलिपुत्र (पटना) एक व्यापारिक केंद्र के रूप में उभरा।
- स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद यह बिहार की राजधानी बना।

पाटलिपुत्र का महत्व

- यह नगर प्राचीन भारत की राजनीति, अर्थव्यवस्था, संस्कृति और धर्म का केंद्र रहा।
- यूनानी यात्री मेगस्थनीज ने पाटलिपुत्र का वर्णन अपनी पुस्तक "इंडिका" में किया है।
- यहाँ से बौद्ध और जैन धर्म का वैश्विक प्रचार हुआ।

निष्कर्ष:

पाटलिपुत्र न केवल प्राचीन भारत की महान राजधानियों में से एक था, बल्कि यह भारतीय संस्कृति और सभ्यता की पहचान भी बना। इसका इतिहास भारत की गौरवशाली विरासत का प्रतीक है।